

५. मीरा के पद

प्रस्तावना

* श्रीकृष्ण प्रेम की अनन्य गायिका मीरा का जन्म मेड़ता (जि. जोधपुर) के निकट 'कुड़की' नामक गाँव में राव रतनसिंह राठौर के यहाँ हुआ था। दो वर्ष की उम्र में उनके दादा दूदाराव उन्हें मेड़ता ले गए क्योंकि मीरा की माँ का देहावसान हो गया था। दूदाराव स्वयं वैष्णव भक्त थे। उस परिवेश के प्रभावस्वरूप मीरा बचपन से ही कृष्ण-भक्ति की ओर उन्मुख हो गई। इनका ब्याह राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र कुँवर भोजराज के साथ हुआ था। विवाह के सात वर्ष बाद भोजराज का स्वर्गवास हो गया। अब वे अपना अधिकांश समय सत्संग एवं पूजा पाठ में बिताने लगीं। पारिवारिक यातनाओं से व्यथित होकर विरक्त हुई मीरा तथा पहले बृन्दावन और बाद में द्वारिका चली गई, जहाँ जीवन के अंतिम समय तक रहीं। मीरा रचित पद 'मीरा पदावली' के नाम से प्रकाशित रूप में प्राप्त हैं। अपने आराध्य 'गिरिधर गोपाल' की विलक्षण रूपछटा के प्रति उनकी अनन्य आसक्ति अनेक भावधाराओं में बह चली है।

यहाँ संकलित पहले पद में कृष्ण प्रेम दीवानी मीरा समग्र संसार को छोड़कर साधु-संतों के साथ रहकर कृष्ण-भक्ति में लीन हो जाती है और लौकिक मोह का त्याग करके अपने आराध्य श्रीकृष्ण के अनन्य भक्तिभाव में डूब जाती है। दूसरे पद में मीरा ने श्रीकृष्ण नामरूपी रत्न की प्राप्ति से उत्पन्न असीम आनंद को अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया है और सत्गुरु को पाकर भवसागर पार उतरने का आनंद कवयित्री को भाव-विभोर कर देता है। तीसरे पद में कृष्ण-भक्ति में मतवाली मीरा ने संसार त्याग की चरमसीमा पर पहुँचकर 'गिरिधरनागर' की शरणागति को स्वीकार किया है।

तो आइए हम मीरा द्वारा रचित तीनों पदों का विस्तृत अभ्यास करते हैं।

स्वाध्याय

१. निम्न लिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए:

१. मीराबाई किसकी भक्ति करती थी ?

उत्तर : मीराबाई श्री कृष्ण की भक्ति करती थी।

२. मीराबाई को कोन सा धन मिल गया है ?

उत्तर : मीराबाई को राम – रतन धन मिल गया है।

३. पैरो में घूँघरूँ देखकर मीरा की सास ने उन्हें क्या कहा ?

उत्तर : पैरो में घूँघरूँ देखकर मीरा की सास ने मीरा को कुलनासी कहा।

४. मीरा को विष का प्याला किस ने भेजा ?

उत्तर : मीरा को विष का प्याला राणाजी ने भेजा।

५. किसकी कृपा से मीरा ने राम – रतन धन पाया है ?

उत्तर : सतगुरु की कृपा से मीरा ने राम – रतन धन पाया है ।

२. निम्न लिखित प्रश्नों के दो- तीन वाक्य में उत्तर लिखिए:

१. गिरधर गोपाल की भक्ति करते हुए मीराबाई ने किस – किस का त्याग किया ?

उत्तर : गिरधर गोपाल की भक्ति करते हुए मीराबाई ने अपने भाई, बंधु और सगे - संबंधियों का त्याग किया है । और अपने आराध्य श्री कृष्ण की शरण में आ गई है ।

२. मीरा के राम रतन धन की क्या विशेषताएँ हैं ?

उत्तर : मीराबाई को राम रतन धन मिला है, जो संसार का सबसे अमूल्य धन है । यह धन की विशेषताएँ हैं कि वह जनम – जनम तक चलेगा । उसे चोर लूट नहीं सकता और खर्च करने से कम नहीं होता, बल्कि दिन – बदिन बढ़ता जाता है ।

३. मीरा इस भवसागर को किस प्रकार पार करना चाहती है?

उत्तर : मीराबाई सत्य की नाव पर सवार होकर अपने सतगुरु रूपी नाविक के सहारे भवसागर पार करना चाहती है । और खुशी – खुशी श्री कृष्ण के गुण गान करना चाहती है ।

३. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच – छ वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. भक्ति के मार्ग में कौन सा संकट आया ? उससे वह कैसे पार हुई ?

उत्तर : मीराबाई बचपन से ही श्री कृष्ण की भक्त थी । वे अपना अधिकांश समय श्री कृष्ण की पुजा एवं सत्तसंग में बिताती थी । यह सब देखकर राणाजी नाखुश थे । उन्होंने मीराबाई के लिए जहर से भरा प्याला भेजा था । पर कृष्ण – भक्ति में मग्न मीराबाई ने उसे खुशी – खुशी पी लिया था । पर इस जहर का मीराबाई पर कोई असर नहीं हुआ ।

२. मीरा के पदों के आधार पर सतगुरु की महिमा का वर्णन कीजिए ।

उत्तर : मीराबाई ने अपने पदों में सतगुरु का महत्व बताया हुआ है । मीराबाई प्रभु कीर्तन में मग्न हैं । वह कहती है कि उसे यह श्री कृष्ण भक्ति रूपी अमूल्य रत्न मिला है, वह भी सतगुरु की कृपा से मिला है । मीराबाई की स्च्चाई की नाव के खेवट यानि की नाविक सतगुरु ही हैं । सतगुरु के सहारे उन्होंने भवसागर पार किया है । मीराबाई कहते हैं कि उनके पास सत्य और गुरु का सहारा है । इसलिए उनके लिए जीवन का सफर बहुत आसान हुआ है, और ईन्ही की वजह से उनका जीवन सफल हुआ है ।

३. भक्ति मे लीन मीरा को लोग क्या – क्या कहते थे ? और क्यों ?

उत्तर : भक्ति मे लीन मीरा को लोग पागल और दीवानी कहा करते है । वह श्री कृष्ण की भक्ति मे ईस तरह खो गई है कि उसे अपनी सुध – बुध नही रहती है । वह पैरो मे घूघरू बांधकर नाचती थी, और साधुओ के संग भजन गाती थी । यह सब देख उनकी सास उन्हे कुलनाशी कहती थी । क्योकि मीराबाई की सास को लगता था कि मीराबाई के ऐसे व्यवहार से कुल का नाम खराब होगा । ईस प्रकार मीराबाई के बारे मे लोग तरह – तरह की बाते करते थे, लेकिन वह तो अपने प्रभु के अनन्य भक्तिभाव मे डूबकर उसके गुणगान करती है ।

४. उचित जोड़े बनाईए :

अ

१. भगत देख राजी हुई
२. मीरा के प्रभु गिरधरनागर
३. वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु

ब

१. किरपा कर अपणयो ।
२. जगत देखि रोई ।
३. हरखि हरखि जस गायो ।
४. भवसागर तरि आयो ।

उत्तर :

अ

१. भगत देख राजी हुई
२. मीरा के प्रभु गिरधरनागर
३. वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु

ब

१. जगत देखि रोई ।
२. हरखि हरखि जस गायो ।
३. किरपा कर अपणयो ।

५. आशय स्पष्ट कीजिए :

१. जनम – जनम की पूंजी पाई जग मे सबै खोवायो ।

उत्तर : जग मे सबै खोवायो यानि की जग मे सभी चिजे नाशवंत है । उनका कभी न कभी नाश हो जाता है पर मीराबाई ने जो रामनाम रूपी पूंजी पाई है वह धन ऐसा है कि वह जनम – जनम तक चलेगा । ईसका और चीजों की तरह नाश नही होता । ईसे चोर लूट भी नही सकता । ईसे कोई खर्च भी नही कर सकता ।

२. सत की नाव खेवटिया सतगुरु भवसागर तरि आयो ।

उत्तर : सत की यानि की सत्य की, खेवटिया यानि की नाविक और वो है सतगुरु मीराबाई ने अपना पूरा जीवन सतगुरु की कृपा से पार कर लिया है । मीराबाई कहते है की उनके पास सत्य गुरु का सहारा है । ईसलिए उनके जीवन का सफर बहुत आसान हुआ है ।